अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का आधुनिक सिद्धान्त
General Equilibrium theory of International Trade
or
Modern theory of International Trade

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के संदर्भ में सर्वप्रथम Adam Smith ने Absolute cost difference (निरपेक्ष लागत सिद्धान्त) दिया था। तदुपरान्त Ricardo ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का तुलनात्मक लागत सिद्धान्त स्थापित किया था।

Classical Economists के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं देशी व्यापार में अन्तर है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की कुछ विशेषताएँ है तथा इनकी अवस्थाओं में कुछ विशेष अन्तर है। जिसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के एक पृथक सिद्धान्त का औचित्य होता है। प्राकृतिक साधनों और मौद्रिक साधनों में अन्तर आम एवं पूंजी की अगतिशीलता, उत्पादन की अवस्थाओं में अन्तर, मुद्रा प्रणाली में अन्तर इत्यादि के आधार पर अन्तर्क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में मूलभूत अन्तर परम्परावादी (classical) अर्थशास्त्रियों ने माना था।

Ohlin ने परम्परावादी अर्थशास्त्रियों से भिन्न विचार प्रकट किया। उनका कहना था कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का तुलनात्मक

लागत सिद्धान्त यह तो स्पष्ट करता है कि दो देशों में व्यापार तुलनात्मक लागतों में अन्तर के कारण होता है किन्तु यह नहीं बताता कि दो देशों के लागत अनुपातों में अन्तर क्यों होता है। जिसके कारण प्रो० हेक्चर (Heckscher) एवं प्रो० ओहलिन (Ohlin) ने आधुनिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। आधुनिक सिद्धान्त के अनुसार

"दो देशों में व्यापार तुलनात्मक लाभ के अन्तर के कारण होता है तथा तुलनात्मक लाभ में अन्तर दो देशों में उत्पत्ति के साधनों की सापेक्षिक कीमतों में भिन्नता तथा विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में साधनों के विभिन्न अनुपातों के प्रयोग के कारण होता है।"

Ohlin के अनुसार 'International Trade is, but a special case of Interlocal or Interregional trade."

Ohlin के अनुसार देश के अन्दर का व्यापार क्षेत्रीय होता है और विदेशी व्यापार अन्तर्क्षेत्रीय होता है और क्षेत्रीय एवं अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार में कोई मूलभूत अन्तर नहीं होता है क्योंकि प्रथमतः उत्पादन के साधन जैसे श्रम एवं पूंजी दो देशों के बीच अगतिशील होते हैं ठीक इसीतरह उत्पादन के साधन देश के

अन्दर श्रमिक, विशेषिताओं में भिन्नता के कारण अगतिशील होते है।
Ohlin ने यह भी कहा है कि देश के अन्दर उत्पादन के साधन गतिशील होते है ऐसे कितने उदाहरण मिलते है जैसे यूरोप से श्रम एवं पूंजी आस्ट्रेलिया, कनाडा एवं अमेरिका आदि देश में निर्मित हुए है।

द्वितीय Ohlin का यह भी मत है कि तुलनात्मक लागत का सिद्धान्त न केवल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में लागू होता है। बल्कि अन्तर्स्थानिक व्यापार में समान रूप से लागू होता है।

तृतीय दो देशों के बीच भौगोलिक तथा प्राकृतिक अवस्थाओं में अन्तर के कारण उत्पादन सम्बन्धी स्थितियाँ उत्पन्न होती है जो देश के अन्दर भी ऐसी स्थिति आ सकती है। चर्तुथ आवागमन लागत भी देशी तथा विदेशी व्यापार में समान रूप से वर्तमान है।

पंचमतः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के समान अन्तर्देशीय व्यापार के क्षेत्र में भी प्रतिबन्ध लगाये जा सकते है।

इसप्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के आधुनिक सिद्धान्त का मुख्य सार यह है कि "दो देशों में व्यापार वस्तुओं की

लागतों में सापेक्षिक अन्तर के कारण होता है और यह अन्तर दो कारणों से होता है।
प्रथम उत्पत्ति के साधनों की कीमतों के सापेक्षिक अन्तर होता है।
द्वितीय वस्तुओं के उत्पादन में उत्पत्ति के साधनों की आवश्यकता में सापेक्षिक भिन्नता होती है। उत्पत्ति के साधनों की कीमतों के सापेक्षिक अन्तर इसलिए होता है क्योंकि दो देशों में साधनों की सीमितता में सापेक्षिक अन्तर होता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि एक देश उन वस्तुओं का विशिष्टीकरण और निर्यात करता है जिनके उत्पादन में सापेक्षिक रूप से उन साधनों की अधिक आवश्यकता होती है। जो उस देश में सापेक्षिक रूप से प्रचुर मात्रा में होने से सापेक्षिक रूप से सस्ते होते हैं।
यह सिद्धान्त निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है —
① व्यापार के लिए दोहरे मॉडल को लिया गया है जिसमें दो देश, दो वस्तुएं एवं उत्पत्ति के दो साधन श्रम एवं पूंजी है।
② दोनों देशों में स्वतन्त्र व्यापार है तथा परिवहन की कोई लागत नहीं लगती।
③ दोनों देशों में ~~स्वतन्त्र व्यापार~~ पूर्ण प्रतियोगिता है।
④ प्रत्येक देश में उत्पत्ति के साधन पूर्ण रूप

Part - 1 (Page-2 Next)